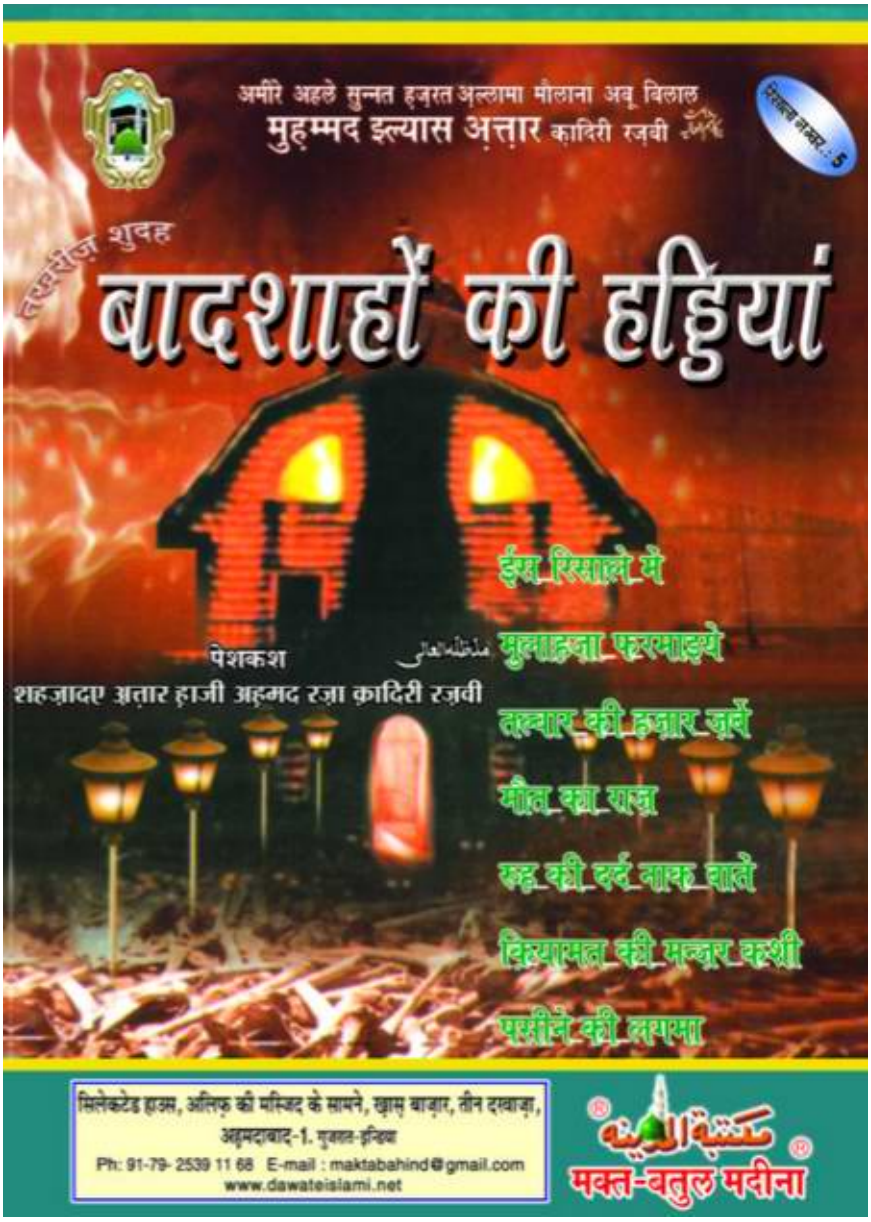

मिलेकटेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, खास बाज़ार, तीन दरवाज़ा,
अहमदाबाद-1. गुजरात-इंडिया
Ph: 91-79- 2539 11 68 E-mail : maktabahind@gmail.com
www.dawateislami.net
मक्त-बतुल मदीना

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ،
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ،

बादशाहों की हड्डियां[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए, 32 स़-फ़ह़ात का येह रिसाला मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप की कई ग़-लत़ियां आप के सामने आ जाएंगी ।

शफ़ाअ़त की बिशारत

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, शफ़ीए़ उमम, रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है, ''जो मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ेगा मैं उस की शफ़ाअ़त फ़रमाऊंगा ।''

(अल क़ौलुल बदीअ़, स़-फ़ह़ा:117, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मन्क़ूल है कि एक बादशाह शिकार के लिये निकला मगर जंगल में अपने मुसाह़िबों से बिछड़ गया । उस ने एक कमज़ोर और ग़मगीन नौ जवान को देखा जो ***इन्सानी हड्डियों*** को उलट पलट रहा है, पूछा, तुम्हारी येह ह़ालत कैसे हो गई है ? और इस सुनसान बियाबान में अकेले क्या कर रहे हो ? उस ने जवाब दिया, मेरा येह ह़ाल इस वजह से है कि मुझे त़वील सफ़र दरपेश है । दो ***मुवक्कल*** (दिन और रात की सूरत में) मेरे पीछे लगे हुए हैं और मुझे ख़ौफ़ज़दा कर के आगे को दौड़ा रहे हैं । या'नी जो भी दिन और रात गुज़रते हैं वोह मुझे मौत से क़रीब करते चले जा रहे हैं, मेरे सामने तंगो तारीक तकलीफ़ों भरी ***क़ब्र*** है, आह ! गलने सड़ने के लिये अनक़रीब मुझे ज़ेरे ज़मीन रख दिया जाएगा, हाए ! हाए ! वहां तंगी व परेशानी होगी वहां मुझे कीड़ों की ख़ूराक बनना होगा, मेरी हड्डियां जुदा जुदा हो जाएंगी और इसी पर इक्तिफ़ा नहीं बल्कि उस के बा'द क़ियामत बरपा होगी जो कि निहायत ही कठिन मरह़ला होगा । मा'लूम नहीं बा'दे अज़ां मेरा जन्नत ठिकाना होगा या مَعَاذَاللّٰه जहन्नम में जाना होगा । तुम ही बताओ, जो इतने ख़त़रनाक मराह़िल से दो चार हो वोह भला कैसे ख़ुशी मनाए ? येह बातें सुन कर बादशाह रंजो मलाल से निढाल हो कर घोड़े से उतरा और उस के सामने बैठ कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा, ऐ नौ जवान ! आप की बातों ने मेरा सारा चैन छीन लिया और दिल को अपनी गरिफ़्त में ले लिया, ज़रा इन बातों की मज़ीद वज़ाहत फ़रमा दीजिये ! तो उस ने कहा, येह मेरे सामने जो हड्डियां जम्अ़ हैं उन्हें देख रहे हो ! येह ऐसे ***बादशाहों की हड्डियां*** हैं जिन्हें दुन्या ने अपनी ज़ीनत में ***उल्झा*** कर फ़रेब में मुब्तला कर दिया था, येह ख़ुद तो लोगों पर ह़ुकूमत करते रहे मगर ग़फ़्लत ने उन के दिलों पर ह़ुक्मरानी की, येह लोग आख़िरत से ग़ाफ़िल रहे यहां तक कि उन्हें अचानक मौत आ गई ! इन की तमाम आरज़ूएं धरी की धरी रह गईं, ने'मतें सल्ब कर ली गईं, क़ब्रों में उन के जिस्म गल सड़ गए और आज इन्तिहाई कस्मपुर्सी के आ़लम में उन की हड्डियां बिखरी पड़ी हैं । अनक़रीब उन की हड्डियों को फिर ज़िन्दगी मिलेगी और उन के जिस्म मुकम्मल हो जाएंगे, फिर उन्हें उन के आ'माल का बदला मिलेगा, और येह ने'मतों वाले

---

1. येह बयान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (सिंध) (1,2,3 स़फ़रुल मुज़फ़्फ़र सिने 1424 हिजरी इतवार स़ह़राए मदीना बाबुल मदीना कराची) में फ़रमाया । ज़रूरी तरमीम के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है । *-उ़बैद रज़ा इब्ने अ़त्तार*

घर जन्नत या अ़ज़ाब वाले घर दोज़ख़ में जाएंगे । इतना केहने के बा'द वोह नौ जवान ***बादशाह*** की आंखों से ओझल हो कर, मा'लूम नहीं कहां चला गया ! इधर ख़ुद्दाम जब ढूंडते हुए पहुंचे तो बादशाह का चेहरा उदास और उस की आंखों से सैले अश्क रवां था । रात आई तो बादशाह ने लिबासे शाही उतारा और दो चादरें जिस्म पर डाल क इ़बादत के लिये जंगल की त़रफ़ निकल गया । फिर उस का पता न चला कि कहां गया ।

(रौज़ुर्रियाह़ीन, स़-फ़ह़ा:107, अल मत़बअ़तुल मैमनिया)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।***

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत में सफ़रे आख़िरत की त़वालत और उस में पेश आने वाली ह़ालत का किस क़-दर रिक़्क़त अंगेज़ बयान है । पुर अस्रार मुबल्लिग़ ने ***बादशाहों की हड्डियां*** सामने रख कर ***क़ब्रो*** ह़श्र की जो मन्ज़र कशी की वोह वाक़ेई इ़ब्रत नाक है । क़ब्रो ह़श्र का मुआ़मला निहायत हौलनाक है मगर इस से क़ब्ल मौत का मरह़ला भी इन्तिहाई कर्बनाक है । इस में नज़्अ़ की सख़्तियों, मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को देखने और बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ जैसे इन्तिहाई होश रुबा मुआ़मलात हैं । चुनान्चे

कांटेदार शाख़

अमीरुल मुअ़्मिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ***कअ़बुल अह़बार*** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया, ऐ कअ़ब ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हमें मौत के बारे में बताओ, ह़ज़रते सय्यिदुना ***कअ़बुल अह़बार*** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, मौत उस टहनी के मानिन्द है जिस में कसी़र कांटे हों और उसे किसी शख़्स़ के पेट में दाख़िल किया जाए और जब हर कांटा एक एक रग में पयवस्त हो जाए फिर कोई खींचने वाला उस शाख़ को ज़ोर से खींचे तो वोह (कांटे दार टहनी) कुछ (गोश्त के रेशे वग़ैरा) साथ ले आए और कुछ बाक़ी छोड़ दे । (मुक़ाशफ़तुल क़ुलूब, स़-फ़ह़ा:168, दारुल कुतुबल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

तल्वार की हज़ार ज़र्बें

ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शैरे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ وَكَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم जिहाद की तरग़ीब दिलाते और फ़रमाते, अगर तुम शहीद नहीं होगे तो मर जाओगे । उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, तल्वार की हज़ार ज़र्बें भी मेरे नज़्दीक बिस्तर पर मौत से बेहतर हैं ।

(मुक़ाशफ़तुल क़ुलूब, स़-फ़ह़ा:167, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने येह इस लिये फ़रमाया कि शहीद ब वक़्ते शहादत जन्नत के ख़ुशनुमा नज़्ज़ारों बल्कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ चाहे तो मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़सीन जल्वों में गुम हो जाता है और उसे नज़्अ़ की सख़्तियों का एह़सास तक नहीं होता । जब कि आ़म ह़ालात में मरने वाला सकरात की शदीद तकालीफ़ से दो चार होता है । किसी ने क्या ख़ूब कहा है,

सकरात में गर रूए मुह़म्मद ﷺ पे नज़र हो
हर मौत का झटका भी मुझे फिर तो मज़ा दे

ख़ौफ़नाक सूरत

एक रिवायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام से फ़रमाया, क्या आप मुझे वोह सूरत दिखा सकते हैं जिस में तश्रीफ़ ला कर काफ़िरों की रूह़ क़ब्ज़ करते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना इज़राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने कहा, आप عَلَیْہِ السَّلَام सह नहीं सकेंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फरमाया, क्यूं नहीं (मैं देख लूंगा) उन्हों ने कहा, तो आप मुझ से अलग हो जाइये। हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अलग हो गए। फिर जब उधर मुतवज्जेह हुए तो मुला-ह़ज़ा किया, काले कपड़ों में मल्बूस एक सियाह फ़ाम शख़्स है जिस के बाल खड़े हैं, बदबू आ रही है उस के मुंह और नथनों से आग और धुवां निकल रहा है। (येह देख कर) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर बे होशी त़ारी हो गई, जब होश आया तो मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام अपनी अस्ल ह़ालत पर आ चुके थे। आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया, ऐ मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام मौत के वक़्त सिर्फ़ तुम्हारी सूरत देखना ही काफ़िर के लिये बहुत बड़ा अ़ज़ाब है।

(मुक़ाशफ़तुल कुलूब, स़-फ़ह़ा:169, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

मौत का राज

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मौत के झटकों और नज़्अ़ की सख़्तियों का इ़ल्म होने के बा वुजूद अफ़्सोस ! हम इस दुन्या में इत्मीनान की ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, आह ! हमारा हर सांस मौत की त़रफ़ गोया एक क़दम और हमारे शबो रोज़ मौत की जानिब गोया एक एक मील हैं। चाहे कोई ज़िन्दगी की कितनी ही बहारें लूटने में कामियाब हो जाए मगर उसे मौत की ख़ज़ां से दो चार होना ही पड़ेगा। कोई चाहे कितना ही ऐ़शो इ़श्रत की ज़िन्दगी गुज़ारे मगर मौत तमाम तर लज़्ज़तों को ख़त्म कर के ही रहेगी। कोई ख़्वाह कितना ही अहलो इ़याल और दोस्तो अह़बाब की रौनक़ों में दिलशाद हो ले मगर मौत उसे जुदाई का ग़म दे कर ही रहेगी, आह ! कितने मग़रूर आबरूदार मौत के हाथों ज़लीलो ख़्वार हो गए, न जाने कितने ज़ालिम हुक्मरानों को मौत ने इन के बुलन्द महल्लात से निकाल कर क़ब्र की काल कोठरी में डाल दिया। न जाने कैसे कैसे अफ़्सरों को मौत ने कोठियों की वुस्अ़तों से उठा कर क़ब्र की तंगियों में पहुंचा दिया, कितने ही वज़ीरों को बंगलों की चकाचौंद रौशनियों से ***क़ब्र*** की तारीकियों में मुन्तक़िल कर दिया। आह ! मौत ही के सबब बहुत सारे दूल्हे मचल्ते अरमानों के साथ आरास्ता व पैरास्ता हुज्रए उ़रूसी में दाख़िल होने के बजाए कीड़े मकोड़ों से उभरती तंगो तारीक़ क़ब्रों में चले गए, न जाने कितने ही नौ जवान ***शादी*** की मुसर्रतों के ज़रीए अपनी जवानी की बहारें देखने से क़ब्ल ही मौत का शिकार हो कर वह़शत नाक क़ब्रों में जा पहुंचे।

बे वफ़ा दुन्या पे मत कर ए 'तेबार — *तू अचानक मौत का होगा शिकार*
मौत आई पहलवां भी चल दिये — *ख़ूबसूरत नौ जवां भी चल दिये*
चल दिये दुन्या से सब शाहो गदा — *कोई भी दुन्या में कब बाक़ी रहा !*

तू ख़ुशी के फूल लेगा कब तलक ?
तू यहां ज़िन्दा रहेगा कब तलक ?

वीरान महल्लात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'सिय्यत पर डटे रहने के सबब अगर दुन्या भी जाती रही और दीन भी बरबाद हो गया तो क्या करोगे ! अल्लाह तबारक व तआ़ला पारह 17 सूरतुल ह़ज की 45 वीं आयत में इर्शाद फ़रमाता है :-

فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿۴۵﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: और कितनी ही बस्तियां हम ने खपा दीं (या'नी वहां रहने वालों समेत हलाक कर दीं) कि वोह सितमगार (या'नी ज़ालिम कुफ़्फ़ार पर मुश्तमिल) थीं, तो अब वोह अपनी छतों पर ढई (गिरी) पड़ी हैं और कितने कुंवें बेकार पड़े (या'नी इन से कोई पानी भरने वाला नहीं) और कितने महल गच किये हुए (या'नी वीरान पड़े हैं)

(पारह 17, अल ह़ज:45)

क़ब्र की तारीकियां

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ दौराने ख़ुत्बा फ़रमाया करते, कहां हैं वोह ख़ूबसूरत चेहरे ? कहां हैं अपनी जवानियों पर इतराने वाले ? किधर गए वोह बादशाह जिन्हों ने आ़लीशान शहर ता'मीर करवाए और उन्हें मज़्बूत क़ल्ओं से तक़्विय्यत बख़्शी ? किधर चले गए मैदान जंग में ग़ालिब आने वाले ? बेशक ज़माने ने उन को ज़लील कर दिया और अब येह ***क़ब्र*** की तारीक़ियों में पड़े हैं। जल्दी करो ? नेकियों में सब्क़त करो ! और नजात त़लब करो।

(ज़म्मुल हवा, बाब:50, स़-फ़हा:498, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या, बैरूत)

ग़फ़्लत की चादर ताने सोना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मुअ्मिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हमें ***क़ब्र*** की तारीकियों का एह़सास दिला कर ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार फ़रमा रहे हैं। शिद्दते मौत को सहना, तारीकीए गोर, उस की वह़शत, कीड़े मकोड़ों की ख़ूराक बनना, हड्डियों का बोसीदा हो जाना, ता क़ियामत ***क़ब्र*** में पड़े रहना और ह़श्र और ह़िसाबे आ'माल, इन तमाम मुआ़मलात को जानने के बा वुजूद ग़फ़्लत की चादर तान कर सोए रहना यक़ीनन तश्वीशनाक है।

गिर्यए उ़स्मानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

ह़ज़रते सय्यिदुना जुन्नूरैन, जामेउ़ल क़ुरआन उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब किसी क़ब्र के क़रीब खड़े होते तो इस क़दर रोते कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की दाढ़ी मुबारक तर हो जाती। इस बारे में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इस्तिफ़्सार किया गया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जन्नत व दोज़ख़ के तज़्किरे पर इतना नहीं रोते मगर जब किसी क़ब्र के क़रीब खड़े होते हैं तो इस क़-दर गिर्या व ज़ारी फ़रमाते हैं इस का क्या सबब है ? ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, मैं ने ***सय्यिदुल मुर्सलीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, रह़मतुल्लिआ़लमीन*** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि बेशक आख़िरत की सब से पहली मन्ज़िल ***क़ब्र*** है। ***क़ब्र*** वाले ने इस से नजात पाई तो बा'द का मुआ़मला आसान है और अगर इस से नजात न पाई तो बा'द का मुआ़मला ज़ियादा सख़्त है।

(सुनने इब्ने माजा, ह़दीस़:4267, जिल्द:4, स़-फ़हा:500, दारुल मा'रेफ़ा बैरूत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! हमारे आक़ा उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को दुन्या ही में ब ज़बाने मालिके खुल्दो कौसर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जन्नत की बिशारत मिलने के बा वुजूद किस क़दर ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ लाहिक़ रहता और एक हमारी ह़ालत है कि हमें अपने ठिकाने का इ़ल्म नहीं इस के बा वुजूद गुनाहों के दलदल में अपने आप को धंसाते चले जा रहे हैं और ***मा'सि़य्यत*** के अम्बार के बा वुजूद खुशियों से झूमे जा रहे हैं और ***क़ब्र*** की दर्द नाक पुकार से यकसर ग़ाफ़िल हैं।

क़ब्र की पुकार

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस़ सरमक़न्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ नक़्ल फ़रमाते हैं कि क़ब्र रोज़ाना पांच मरतबा येह निदा करती है, (1) ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर चलता है ह़ालांकि मेरा पेट तेरा ठिकाना है। (2) ऐ आदमी ! तू मुझ पर उ़म्दा उ़म्दा खाने खाता है अनक़रीब मेरे पेट में तुझे कीड़े खाएंगे। (3) ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर हंसता है जल्द ही मेरे अन्दर आ कर रोएगा। (4) ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर खुशियां मनाता है अनक़रीब मुझ में ग़मगीन होगा। (5) ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर गुनाह करता है अनक़रीब मेरे पेट में मुब्तलाए अ़ज़ाब होगा।

(तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन, स़-फ़ह़ा:51, दारे इब्ने कसी़र, बैरूत)

क़ब्र रोज़ाना येह करती है पुकार — मुझ में हैं कीड़े मकोड़े बे शुमार
याद रख ! मैं हूं अंधेरी कोठड़ी — मुझ में सुन वह़शत तुझे होगी बड़ी
मेरे अन्दर तू अकेला आएगा — हां मगर आ'माल लेता आएगा
तेरा फ़न तेरा हुनर ओ़हदा तेरा — काम आएगा न सरमाया तेरा
दौलते दुन्या के पीछे तू न जा — आख़िरत में माल का है काम क्या
दिल से दुन्या की मह़ब्बत दूर कर — दिल नबी ﷺ के इ़श्क़ से मा'मूर कर

लन्दनो पेरिस के सपने छोड़ दे
बस मदीने ही से रिश्ता जोड़ ले

रूह़ की दर्दनाक बातें

मन्क़ूल है कि रूह़ जब जिस्म से जुदा होती है और उस पर ***सात दिन*** गुज़रते हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करती है, ऐ रब ! عَزَّوَجَلَّ मुझे इजाज़त अ़त़ा फ़रमा कि मैं अपने जिस्म का ह़ाल दरयाफ़्त करूं, तो उसे इजाज़त मिल जाती है। फिर वोह अपनी क़ब्र की त़रफ़ आती है, उसे दूर से देखती, और अपने जिस्म को मुलाह़ज़ा करती है कि वोह ***मुतग़य्यर*** (या'नी बदला हुवा) है और उस के नथनों , मुंह, आंखों और कानों से पानी रवां है। वोह अपने जिस्म से केहती है, "बे मिस़ाल ह़ुस्नो जमाल के बा'द अब तू इस ह़ाल में है !" येह केह कर चली जाती है। फिर ***सात दिन*** के बा'द इजाज़त ले कर दोबारा ***क़ब्र*** पर आती और दूर से देखती है कि मुर्दे के मुंह का पानी ख़ून मिली पीप, आंखों का पानी ख़ालिस़ पीप और नाक का पानी ख़ून बन चुका है। तो उस से केहती है, "अब तू इस ह़ाल पर पहुंच चुका है !" येह केह कर परवाज़ कर जाती है। फिर ***सात रोज़*** के बा'द इजाज़त ले कर उसी त़रह़ दूर से देखती है, तो ह़ालत येह होती है कि आंखों की पुतलियां चेहरे पर ढलक चुकी हैं, पीप कीड़ों में तब्दील हो चुकी है, कीडे उस के मुंह से दाख़िल हो कर और नाक से निकल रहे हैं। तब वोह जिस्म से केहती है, "तू नाज़ो नेअ़म में पलने के बा'द इस ह़ाल को पहुंच गया है !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तक़्वा व नेक अ़मल के इ़लावा किसी चीज़ ने क़ब्र में किसी को फ़ाइदा न पहुंचाया।''

(रौज़ुल फ़ाइक़, स़-फ़हा:330, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

नेक शख़्स़ की निशानी

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्हाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, एक शख़्स़ ने इस्तिफ़्सार किया, या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों में सब से ज़ियादा ज़ाहिद कौन है ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, जो शख़्स़ ***क़ब्र*** और गल सड़ जाने को न भूले, दुन्या की ज़ीनत को छोड़ दे, फ़ना होने वाली ज़िन्दगी पर बाक़ी रहने वाली को तरजीह़ दे और कल आने वाले दिन को अपनी ज़िन्दगी में गिनती न करे नीज़ अपने आप को ***क़ब्र*** वालों में शुमार करे। (मुस़न्नफ़ इब्ने अबी शैबा, ह़दीस़:34307, जिल्द:7, स़-फ़ह़ा:99, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

जैसी करनी वैसी भरनी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते, बेशक तुम गर्दिशे अय्याम में हो और मौत अचानक आ जाएगी, जिस ने भलाई का बीज बोया अनक़रीब वोह उम्मीद की फ़स्ल काटेगा और जिस ने बुराई काश्त की जल्द ही नदामत की खेती पाएगा। हर काश्तकार के लिये उसी की खेती है।

(ज़म्मुल हवा, बाब:50, स़-फ़ह़ा:498, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

अभी से तैयारी कर लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई ***अ़क़्लमन्द*** वोही है जो मौत से क़ब्ल मौत की तैयारी करते हुए नेकियों का ज़ख़ीरा इकट्ठा कर ले और सुन्नतों का म-दनी चराग़ ***क़ब्र*** में साथ ले ले और यूं ***क़ब्र*** की रौशनी का इन्तिज़ाम कर ले, वरना ***क़ब्र*** हरगिज़ येह लिह़ाज़ न करेगी कि मेरे अन्दर कौन आया ? ***अमीर*** हो या फ़क़ीर वज़ीर हो या उस का मुशीर, ह़ाकिम हो या मह़कूम, अफ़्सर हो या चपड़ासी, सेठ हो या मुलाज़िम, डॉक्टर हो या मरीज़, ठेकेदार हो या मज़्दूर। अगर किसी के साथ भी तोशए आख़िरत में कमी रही, ***नमाज़ें*** क़स़्दन क़ज़ा कीं, र-मज़ान शरीफ़ के रोज़े बिला उ़ज़्रे शर-ई न रखे, फ़र्ज़ होते हुए भी ज़क़ात न दी, ह़ज फ़र्ज़ था मगर अदा न किया, बा वुजूदे क़ुदरत शर-ई पर्दा नाफ़िज़ न किया, मां बाप की ना फ़रमानी की, झूट, ग़ीबत, चुग़ली की आ़दत रही, फ़िल्में डिरामें देखते रहे, गाने बाजे सुनते रहे, दाढ़ी मुंडवाते या एक मुट्ठी से घटाते रहे, अल ग़-रज़ ख़ूब गुनाहों का बाज़ार गर्म रखा तो अल्लाह और उस के रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़गी की सूरत में सिवाए ह़सरत व नदामत के कुछ हाथ न आएगा। ***जिस*** ने फ़राइज़ के साथ साथ नवाफ़िल की भी पाबन्दी की, र-मज़ानुल मुबारक के इ़लावा नफ़्ली रोज़े भी रखे, कूचा कूचा, गली गली नेकी की दा'वत की धूमें मचाईं, क़ुरआने पाक की ता'लीम न सिर्फ़ ख़ुद ह़ासिल की बल्कि दूसरों को भी दी, चोक दर्स देने मं हिचकिचाहट मह़सूस न की, घर दर्स जारी किया, सुन्नतों की तरबिय्यत के ***म-दनी क़ाफ़िलों*** में बा क़ाइदगी से सफ़र करने के साथ साथ दीगर मुसल्मानों को भी इस की तरग़ीब दिलाई, रोज़ाना ***म-दनी इन्आ़मात*** का कार्ड पुर कर के हर माह अपने ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाया अल्लाह और उस के प्यारे रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम से ईमान सलामत ले कर दुन्या से रुख़्स़ती होगी तो

اِن شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस की क़ब्र में ह़श्र तक रह़मतों का दरया मौजें मारता रहेगा और नूरे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चश्मे लहराते रहेंगे।

क़ब्र में लहराएंगे ता ह़श्र चश्मे नूर के
जल्वा फ़रमा होगी जब त़ल्अ़त रसूलुल्लाह की ﷺ

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

क़ियामत की मन्ज़रकशी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आह ! पैदा हो ही गए तो अब मरना भी पड़ेगा। हाए हाए ! हम गुनहगारों का क्या बनेगा ! मौत की तकालीफ़ और ***क़ब्र*** में मुद्दतों गलते सड़ते रहने ही पर इक्तिफ़ा नहीं, ***क़ब्रों*** से दोबारा उठना और क़ियामत का भी सामना करना है, क़ियामत का दिन सख़्त हौलनाक है और इस में कई दुश्वार गुज़ार घाटियां हैं। क़ियामत के भयानक मन्ज़र का तस़व्वुर जमाने की कोशिश कीजिये, आह ! आह ! आह ! तांबे की दहकती हुई ज़मीन पर तमाम मख़्लूक़ इकट्ठी होगी, सितारे झड़ जाएंगे और चांद सूरज के बे नूर होने के बाइ़स घुप अंधेरा छा जाएगा मगर रौशनी ख़त्म होने के बा वुजूद तपश बर क़रार रहेगी। अहले महशर इसी ह़ालत में होंगे कि अचानक आस्मान टूट पड़ेगा और उस के फटने की आवाज़ किस क़दर भयानक होगी इस का तस़व्वुर कीजिये, पहाड़ धुनी हुई रूई की त़रह़ उड़ जाएंगे और लोग ऐसे होंगे जैसे फैले हुए पतंगे। कोई किसी का पुरसाने ह़ाल न होगा, भाई भाई से आंख न मिलाएगा, दोस्त दोस्त से मुंह छुपाएगा, बेटा बाप से पीछा छुड़ाएगा, शौहर बीवी को दूर हटाएगा और बेटा मां का बोझ न उठाएगा। अल ग़-रज़ कोई भी किसी के काम न आएगा। ***सुनो ! सुनो !*** दिल के कानों से सुनो 30 वें पारे की सूरतुल क़ारिअ़ह में क़ियामत की इस त़रह़ मन्ज़रकशी की गई है,

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ اَلْقَارِعَةُ ۙ﴿۱﴾ مَا الْقَارِعَةُ ۚ﴿۲﴾ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ؕ﴿۳﴾ یَوْمَ یَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۙ﴿۴﴾ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ؕ﴿۵﴾ فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِیْنُهٗ ۙ﴿۶﴾ فَهُوَ فِیْ عِیْشَةٍ رَّاضِیَةٍ ؕ﴿۷﴾ وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِیْنُهٗ ۙ﴿۸﴾ فَاُمُّهٗ هَاوِیَةٌ ؕ﴿۹﴾ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا هِیَهْ ؕ﴿۱۰﴾ نَارٌ حَامِیَةٌ ۢ﴿۱۱﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान रह़म वाला, दिल दहलाने वाली, क्या वोह दहलाने वाली ? और तूने क्या जाना क्या है दहलाने वाली। जिस दिन आदमी होंगे जैसे फैले पतंगे, और पहाड़ होंगे जैसे धुनकी ऊन। तो जिस की तोलें (या'नी वज़्न में नेकियां) भारी हुईं वोह तो मन मानते ऐ़श में हैं और जिस की तोलें हल्की पड़ीं वोह नीचा दिखाने वाली गोद में है और तू ने क्या जाना क्या नीचा दिखाने वाली ? एक आग शो'ले मारती।

नाज़ों का पाला काम न आएगा

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि बरोज़े क़ियामत मां अपने बेटे से मिलेगी और कहेगी, ऐ बेटे ! क्या तू मेरे पेट में न रहा, क्या तू ने मेरा दूध न पिया ? बेटा अ़र्ज़ करेगा, ऐ मेरी मां ! क्यूं नहीं। इस पर मां कहेगी, बेटा ! मेरे गुनाहों का बोझ बहुत भारी है इस में से तू सिर्फ़ एक गुनाह ही उठा ले। बेटा कहेगा, मेरी मां ! मुझ से दूर हो जा, मुझे अपनी फ़िक्र लाह़िक़ है, मैं तेरा या किसी और का बोझ नहीं उठा सकता। (रौज़ुल फ़ाइक़, स़-फ़ह़ा:184, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या, बैरूत)

पसीने में डुबकियां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन तकलीफ़ों के इलावा, भूके प्यासे रहने और ह़िसाबो किताब की तकालीफ़ का सामना करना होगा। वहां पर अ़र्श के साए के इलावा

कोई साया न होगा जो ***मुक़र्रबीन*** ही को नसीब होगा। उन के इलावा लोग सूरज की गरमी में सिसकते बिलकते होंगे, कसरते इज़्दिहाम के बाइस एक दूसरे को धक्के दे रहे होंगे, नीज़ गनाहों की नदामत, सांसों की हरारत, सूरज की तमाज़त और ख़ौफ़ व दहशत के सबब पसीना बेह कर ज़मीन में सत्तर गज़ तक जज़्ब हो जाएगा। फिर लोगों के गुनाहों के मुताबिक़ किसी के टख़्नों, किसी के घुटनों, बा'ज़ों के सीनों और बा'ज़ों के कानों की लौ तक चढ़ेगा और कोई बद नसीब तो उस में डुबकियां खा रहा होगा। चुनान्चे

कानों तक पसीना

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि अल्लाह के महबूब, ***दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, जिस दिन लोग तमाम जहानों के पालने वाले के हुज़ूर खड़े होंगे तो बा'ज़ लोगों का पसीना इस क़दर होगा कि निस्फ़ कानों तक पहुंच जाएगा।

(सहीह बुख़ारी, ह़दीस:6531, जिल्द:4, स-फ़ह़ा:255, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या, बैरूत)

पसीने की लगाम

एक रिवायत में यूं है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन सूरज ज़मीन से क़रीब हो जाएगा तो लोगों का पसीना बहेगा बा'ज़ लोगों का पसीना उन की एड़ियों तक, बा'ज़ का निस्फ़ पिंडलियों तक, बा'ज़ का घुटनों तक, कुछ का रानों तक, बा'ज़ लोगों का कमर तक और कुछ का कांधों तक और कुछ का गरदन तक और कुछ का मुंह तक पहुंचेगा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से इशारा फ़रमाया कि वोह उन को लगाम डाल देगा और बा'ज़ को पसीना ढांप लेगा ? और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने हाथ मुबारक को सरे अन्वर पर रखा।

(मुस्नदे इमाम अह़मद, ह़दीस:17444, जिल्द:6, स-फ़ह़ा:146, दारुल फ़िक्र बैरूत)

50 हज़ार साल तक नज़र न फ़रमाएगा

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पारह 30 सूरतुल मुतफ़्फ़िफ़ीन की छटी आयते करीमा तिलावत फ़रमाई,

يَوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: जिस दिन सब लोग ***रब्बुल आ़लमीन*** के हुज़ूर खड़े होंगे।

(पारह:30, अल मुतफ़्फ़िफ़ीन:6)

फिर फ़रमाया, "तुम्हारा क्या ह़ाल होगा जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम सब को जम्अ़ करेगा, जैसे तरकश में तीर जम्अ़ होते हैं, पचास हज़ार साल तक तुम्हारी त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाएगा।"

(मज्मउ़ज़्ज़वाइद, ह़दीस:11476, जिल्द:7, स-फ़ह़ा:285, दारुल फ़िक्र बैरूत)

पचास हज़ार साल तक खड़े रहेंगे

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, तुम्हारा उस दिन के बारे में क्या ख़याल है जब लोग पचास हज़ार साल की मिक़्दार अपने क़दमों पर खड़े होंगे ! इस में न तो एक लुक़्मा खाने को मिलेगा और न ही एक घूंट पानी मिले। ह़त्ता कि जब पियास से इन की गरदनें लटक जाएंगी और

भूक से उन के पेट जल जाएंगे तो उन्हें जानिबे दोज़ख़ ले जा कर खौलता हुवा पानी पिलाया जाएगा । थक हार कर बाहम कलाम करेंगे कि आओ देखें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में किसी को सिफ़ारिश के लिये दरख़्वास्त करें इस त़रह़ वोह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की त़रफ़ रुख़ करेंगे मगर वोह जिस नबी عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में ह़ाज़िरी देंगे वोह उन्हें दूर कर देंगे और फ़रमाएंगे, मुझे मेरे ह़ाल पर छोड़ दो, मुझे मेरे अपने मुआ़मले ने दूसरों से बे नियाज़ कर दिया है । नीज़ उ़ज़्र पेश करेंगे कि अल्लाह तआ़ला ने आज सख़्त ग़ज़ब फ़रमाया है कि इस क़दर ग़ज़ब इस से पहले कभी न फ़रमाया और न कभी आइन्दा फ़रमाएगा । ह़त्ता कि मह़बूबे रब्बुल इ़ज्जत, ताजदारे रिसालत, नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जिन जिन की इजाज़त मिलेगी उन की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे ।

(एह़याउल उ़लूम, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:548, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या बैरूत)

कहेंगे और नबी اِذْهَبُوْا اِلٰى غَيْرِى
मेरे हुज़ूर के लब पर اَنَا لَهَا होगा ﷺ

(ज़ौक़े ना'त)

सज़ाएं कैसे बरदाश्त होंगी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ियामत की हौलनाकियों और अहले मह़्शर की तकलीफ़ों की येह तो एक झलक है और येह परेशानियां भी ह़िसाबो किताब और जहन्नम के अ़ज़ाब से पहले की हैं । ज़रा ग़ौर तो कीजिये कि आज अगर ज़रा सी गरमी बढ़ जाए तो हम तड़प उठते हैं, अगर बिजली चली जाए तो अंधेरे में हम पर वह़शत त़ारी हो जाती है, एक वक़्त के खाने में ताख़ीर हो जाए तो भूक से निढाल हो जाते हैं, शिद्दते पियास में पानी न मिले तो सिसक जाते हैं, गरमियों में, ह़बस हो जाए (या'नी हवा चलना रुक जाए) तो बे क़रार हो जाते हैं, सूरज की तपश के सबब कस़रते पसीना पर बिलबिला उठते हैं, ट्रेफ़िक जाम हो जाए तो बेज़ार हो जाते हैं, आंख में अगर गर्द का ज़र्रा पड़ जाए तो बे चैन हो जाते हैं, वालिद स़ाह़िब डांट दें तो बुरी त़रह़ झेंप जाते हैं, उस्ताद झिड़क दे तो सहम जाते हैं । आह ! आह ! आह ! अगर ***नमाज़*** क़ज़ा करने के सबब आग का अ़ज़ाब दे दिया गया, र-मज़ानुल मुबारक का रोज़ा तर्क करने की वजह से अगर भूक व प्यास मुसल्लत़ कर दी गई, ***ज़कात*** न देने के बाइ़स़ अगर दहकते हुए सिक्के जिस्म पर दाग़ दिये गए, ***बद निगाही*** करने के सबब अगर आंखों में आग भर दी गई, लोगों की ख़ुफ़िया बातें, गानेबाजे, ग़ीबतें, गन्दे चुटकुलें वग़ैरा सुनने की वजह से अगर कानों में ***पिघला*** हुवा सीसा उंडेल दिया गया, मां बाप की ना फ़रमानी और क़त़्ए रेह़मी (या'नी रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ात तोड़ देने) के बाइ़स़ ***अ़ज़ाब*** में मुब्तला कर दिये गए तो क्या करेंगे ? अब भी वक़्त है मान जाइये, क़ियामत की राह़त और मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की

शफ़ाअ़त के हुसूल के लिये सिद्क़े दिल के साथ गुनाहों से तौबा कर लीजिये।

कर ले तौबा रब ﷻ की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

क़ियामत में आसानी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ियामत के 50 हज़ार साला दिन में जहां ***कुफ़्फ़ार*** ना क़ाबिले बरदाश्त तकालीफ़ से दोचार होंगे वहां ***मुअ्मिनीन*** पर झूम झूम कर रह़मतें बरस रही होंगी चुनान्चे सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है, उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है कि क़ियामत का दिन मो'मिन पर आसान होगा ह़त्ता कि दुन्या में फ़र्ज़ नमाज़ की अदाएगी से भी थोड़ा वक़्त मा'लूम होगा।

(मुस्नदे इमाम अह़मद, ह़दीस़:11717, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:151, दारुल फ़िक्र बैरूत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर इसी त़रह़ ग़फ़्लत भरी ज़िन्दगी गुज़ार कर दुन्या से रुख़्स़त हो गए और गुनाहों के बाइस़ अल्लाह और उस के प्यारे रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नाराज़ हो गए और अगर ईमान बरबाद हो गया तो ख़ुदा की क़सम ! सख़्त पछतावा होगा। ***सुनो ! सुनो !*** 30 वें पारे की ***सूरतुन्नाज़िआत*** की आयात नम्बर 34 ता 41 में फ़रमाया जा रहा है,

فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الْكُبْرٰى ﴿۳۴﴾ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ﴿۳۵﴾ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِمَنْ يَّرٰى ﴿۳۶﴾ فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ﴿۳۷﴾ وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿۳۸﴾ فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿۳۹﴾ وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿۴۰﴾ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿۴۱﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: फिर जब आएगी वोह आ़म मुस़ीबत सब से बड़ी (या'नी जब दूसरी बार सूर फूंकने पर लोग क़ब्रों से उठाए जाएंगे) उस दिन आदमी याद करेगा जो कोशिश की थी (या'नी दुन्या में जो भी नेकियां और बदियां की थीं उन को याद करेगा) और जहन्नम हर देखने वाले पर ज़ाहिर की जाएगी तो वोह जिस ने सरकशी की (या'नी ह़द से गुज़रा और कुफ़्र इख़्तियार किया) और दुन्या की ज़िन्दगी को तरजीह़ दी तो बेशक जहन्नम ही उस का ठिकाना है। और वोह जो अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) के ह़ुज़ूर खड़े होने से डरा और नफ़्स को (ह़राम चीज़ों की) ख़्वाहिश से रोका तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है।

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें मौतो क़ब्र और ह़श्र की तैयारी की तौफ़ीक़ दे, हमारा ईमान सलामत रख और नज़्ए रूह़ में आसानी दे, सकरात में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जल्वा नस़ीब फ़रमा।

नज़्अ़ के वक़्त मुझे जल्वए मह़बूब ﷺ दिखा
तेरा क्या जाएगा मैं शाद मरूंगा या रब ! ﷻ

اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

झूट का अ़ज़ाब

जब भी "झूट" बोलने का इरादा हो येह रिवायत याद कर के ख़ुद को डराइये !

जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आ़लमे बरज़ख़ का एक अ़ज़ाब मुलाह़ज़ा फ़रमाया, जिस में एक आदमी बैठा हुवा था और दूसरा खड़ा था, खड़ा हुवा आदमी लकड़ी के दस्ते वाली लोहे की सन्सी से बैठे हुए शख़्स़ की बाछ (या'नी होंटों का गोशा) पकड़ कर चीरता हुवा गुद्दी तक लाता फिर दूसरी त़रफ़ से भी इसी त़रह़ चीर डालता फिर वोह पहली त़रफ़ आ जाता उतनी देर में पहले वाली बाछ अस़्ली ह़ालत में आ चुकी होती तो अब वोह इस

को पहले ही की त़रह़ चीरता, बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ किया गया, येह क़ज़्ज़ाब या'नी झूटा शख़्स़ है इसे क़ियामत तक क़ब्र में येह चीर फाड़ का अ़ज़ाब दिया जाता रहेगा।

(मुलख़्ख़स़ अज़ बुख़ारी, रक़मुल ह़दीस़:1386, जिल्द अव्वल, स़-फ़ह़ा:467, तब्आ़ दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या बैरूत)

कर ले तौबा रब عَزَّوَجَلَّ की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

دعوتِ اسلامی
www.dawateislami.net